देवनागरी और हिन्दी शिक्षण पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार सम्पन्न

नई दिल्ली/डेनमार्क। नागरी लिपि परिषद, भारत एवं आरहुस विश्वविद्यालय, डेनमार्क के संयुक्त तत्वावधान में 'देवनागरी और हिन्दी शिक्षण – भारतीय दृष्टि और वैश्विक परिदृश्य' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें भारत सहित डेनमार्क, अमेरिका, हंगरी, क्रोएशिया और मॉरीशस के हिन्दी विद्वानों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं एवं हिन्दी प्रेमियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के आरम्भ में नीदरलैंड निवासी 'साझा संसार' के अध्यक्ष एवं साहित्यकार रामा तक्षक ने सभी आमंत्रित वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने इस अंतरराष्ट्रीय परिचर्चा के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी विद्वानों का अभिनंदन किया।

लगभग ढाई घंटे तक चली इस परिचर्चा का संयोजन एवं संचालन डेनमार्क निवासी साहित्यकार अर्चना पैन्यूली ने किया। उन्होंने विभिन्न देशों के हिन्दी अध्येताओं को एक साझा मंच पर लाकर देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, उसकी व्यावहारिक चुनौतियों, वैश्विक हिन्दी शिक्षण के अनुभवों तथा बदलते डिजिटल परिवेश में उसके भविष्य पर सार्थक विमर्श का अवसर प्रदान किया। कार्यक्रम में आरहुस विश्वविद्यालय, डेनमार्क के डॉ. विवेक कुमार शुक्ल, हंगरी के एओटवोश लोरैंड विश्वविद्यालय के डॉ. बैंत्सै फुश्तोश, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर की प्रो. कीर्ति माहेश्वरी, जाग्रेब विश्वविद्यालय, क्रोएशिया में अध्यापनरत प्रो. प्रभाकरन हेब्बार इल्लथ, गुजरात की डॉ. उमा मेहता, अमेरिका के येल विश्वविद्यालय की डॉ. स्वप्ना शर्मा, चेन्नई की डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन तथा मॉरीशस के डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने अपने विचार और अनुभव साझा किए।

डॉ. विवेक कुमार शुक्ल ने देवनागरी की व्यापकता और हिन्दी उच्चारण की व्यावहारिक कठिनाइयों पर प्रकाश डाला। प्रो. प्रभाकरन हेब्बार इल्लथ ने देवनागरी को अधिक समावेशी बनाने तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों को अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त लिपि-चिह्नों के विकास की आवश्यकता बताई। उन्होंने यूनिकोड, डिजिटल टंकण, वाणी-पहचान और आधुनिक भाषा-प्रौद्योगिकी के विकास पर भी जोर दिया। डॉ. बैंत्सै फुश्तोश ने हंगरी में हिन्दी शिक्षण के अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों की उच्चारण संबंधी कठिनाइयों और बोलचाल की हिन्दी तथा 'हिंग्लिश' के प्रति बढ़ती रुचि का उल्लेख किया। प्रो. कीर्ति माहेश्वरी ने देवनागरी के नियमित अभ्यास और प्रवासी भारतीय बच्चों के लिए हिन्दी शिक्षण को सरल एवं रुचिकर बनाने पर बल दिया। डॉ. उमा मेहता ने शुद्ध उच्चारण, ध्वनि-शिक्षण और वर्तनी के संबंध को रेखांकित करते हुए उच्च शिक्षा में हिन्दी के अधिक प्रयोग की आवश्यकता जताई। डॉ. स्वप्ना शर्मा ने अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण के अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि कथा-साहित्य, फिल्म और नाटक के माध्यम से सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के चारों भाषायी कौशल विकसित किए जा सकते हैं डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन ने देवनागरी को भारतीय भाषाओं के बीच संपर्क और सांस्कृतिक एकता का महत्त्वपूर्ण माध्यम बताया। मॉरीशस के डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने भी परिचर्चा में सहभागिता की। कार्यक्रम के अंत में नागरी लिपि परिषद नई दिल्ली के महामंत्री डॉ. हरिसिंह पाल ने देवनागरी के प्रचार-प्रसार और परिषद के प्रयासों पर प्रकाश डाला। प्रसिद्ध हिन्दीसेवी डॉ. जवाहर कर्नावट ने भी अपने विचार व्यक्त किए। एक श्रोता ने देवनागरी पर कविता प्रस्तुत की। परिचर्चा में यह विचार प्रमुखता से उभरा कि हिन्दी के वैश्विक विस्तार के लिए देवनागरी की परंपरागत विशेषताओं के संरक्षण के साथ आधुनिक तकनीक, सरल शिक्षण-पद्धतियों और अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। विभिन्न देशों के विद्वानों की सहभागिता से यह आयोजन हिन्दी और देवनागरी के भविष्य पर एक महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक संवाद का मंच बना।

मां हयहट्ट देवी की महिमा

आज दादाजी ने मुझे एक अद्भुत और चमत्कारिक कहानी सुनाई... बिहार में स्थित दरभंगा जिला के बेनीपूर प्रखंड में एक नवादा गाँव हैं ।नवादा गाँव में एक बहुत पूराना, और प्रसिद्ध माँ दुर्गा का मंदिर हैं ।कहां जाता हैं यहां माँ स्वयं वास करती हैं आज तक यहां से कोई खाली नही गया ।जिसकी जैसी इच्छा होती हैं ।माँ उसे वैसी ही फल भी देती हैं ।

कहा जाता हैं बहुत समय पहले नवादा भगवती की प्रसिद्धी सुन कर एक दिन हावीडीह गाँव के कुछ लोग मंदिर आए और माँ की प्रतिमा उठा कर लेकर चलें गए ।और इसकी खबर गाँव वालों को बिल्कुल भी नही हुई ।अगली सुबह जब मंदिर का दव्र खोला गया तो माँ का प्रतिमा मंदिर में ना पाकर पुजारी जी चकित हो गए और जोर -जोर से चिल्लाने लगें अरे गाँव वालों माँ हमें छोड़ कर चली गई ।ना जाने हम से क्या भुल हो गई ।जो माता नाराज होकर चली गई ।देखते ही देखते ये बात आग की तरह फैल गई पूरें इलाके में ,हर लोग मंदिर आकर देखने लगा, रोता बिलखता अपना सर दीवारों पे पिटता आखिर ऐसा अनर्थ कैसे हो गया ।माँ क्यों चली गई ।माता के जाने से गाँव वालों की स्थिति बहुत बुरी हो गई ।ना उनका अपनी कोई सुद्ध रही ना अपनों की हर एक नर -नारी बेचैन सा हो गया ।यहां तर की उन्होनें अन्न -जल का भी त्याग कर दिया ।कुछ दिन हुए गाँव वालों की स्थिति बिगड़ती ही जा रही थी ।तो गाँव के बड़े -बुढें ने कहां ऐसा कब तक चलेगा ।जब से माँ हम सब से रुठ कर गई हैं ।तब हमारे गांव की हालत बहुत खराब हो गई हैं ।हम कैसे रह सकते हैं अपने माँ के बिना ।हमें कुछ करना चाहिए ।क्यों ना हम अगल -बगल के गाँव में माँ को ढुंढें ।बस ये बात सुनते ही सारे नवयुवक आग की तरह फैल गए गाँव -गाँव में ।निराशा के सिवा कुछ हाथ नही लगा ।फिर अचानक एक जगह बहुत भीड़ उमड़ी थी तो ये नव युवक दल भी धीरे -धीरे वही पहुँचें ।वहां जो इन्होनें देखा सभी लोग मां का भजन गा रहे थें ।झुम रहें थे ।इन लोगों ने कहा भाई ये प्रतिमा तो हयहट्ट देवी मां का हैं ।ये यहां कैसे? इनके बिना नवादा धाम के लोगों की क्या दशा हो गई हैं ।

इन्हें शांति से इनके स्थान पर पहुँचा दो, नही तो ठीक नहीं होगा ।इतना सुनते ही वो गाँव वालें भड़क गए और मरने -मारने पे उतारू हो गए ।सारे लोग लाठिया निकाल लिए और वो संख्या में भी ज्यादा थे ।इधर नावादा धाम वाले दो -चार जने ही थें ।वो भी नव युवक फिर भी दोनों आपस में भीड़ गए ।तनीजा ये हुआ इन नव युवकों को चोट लग गई । उस गाँव के बड़े बूढ़े ने कहा इन्हें जाने दों, तुमलोग गलत कर रहे हो ।जैसे -तैसे ये लोग वहा से जान बचा कर भागें । जैसे ही ये अपने गाँव पहुँचें इन लोगों की दशा देख कर सब घबरा गए ।और पूछा ये सब कैसे हुआ? तब इन लोगों ने सारा वृतांत कह सुनाया ।गाँव वाले बड़े गुस्सें में आ गए ।सब बोले चलो तो चलो उस हावीडीह गाँव वालों की इतनी हिम्मत हमारी मां की प्रतिमा चुरा कर ले गया ।रात बहुत हो चुकी थी ।कुछ लोगों ने कहा अभी रात हो चुकी हैं ।इस वक्त जाना ठीक नहीं होगा, हम कल सुबह चार बजे निकलेगें और अपनी माँ को वापस ले आयेंगे ।

सब ने हा कर दी! जब रात में सब सो रहे थे तो मां ने हर एक नवादा वासी के सपने में आई और बोली मेरे बच्चों तुम लोग लड़ाई झगड़े मत करो मैं यही हूं, मैं कही नही गई हूं ।मां अपने बच्चों को छोड़ कर भला कैसे जा सकती हैं ।तुम लोग शांत हो जाओ मुर्ती की स्थापना वहां हो चुकी हूँ ।और बार-बार वो नही हटाई जाती हैं ।इससे अनिष्ट होता हैं ।मेरी बात मानो तुम लोग वहां मत जाओ गाँव वालों ने कहां हम आपके बिना नही रह सकते मां ।मैं यही हूं पुत्र केवल मेरा शरीर वहां हैं ।मैं हमेशा इसी मंदिर में तुम सबके पास ही रहूंगी ।अब से तुम मेरी सिंहासन का पूजन करना, मैं इसी रहती हूं और पहलें की तरह ही मैं अपने सभी भक्तों की मनोकामना भी पूरी करूंगा ।सच मां ऐसा कह कर सब उनके चरणों से लग गया ।और मां अंतर्ध्यान हो गई।

किरण काजल बेंगलुरु

चमचागिरी आर्ट सेंटर

तखतमल कल रास्ते में मिल गये। आजकल उनका बाहर निकलना लगभग बंद हो गया है। बहुत जरूरी हो तभी बाहर दिखते हैं। शायद आज जरूरत होगी तभी दिखे।उन्होंने नया काम शुरू कर दिया है। वे अपने ऑफिस में जाने माने चमचे कहलाते थे। जो लोग नई भर्ती होकरआते थे। वे उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर चमचागिरी करने के तरीका जानना चाहते थे। बाबू मुंशी लोग उनसे चाय समोसा भी डकार जाते थे। (के बाद भी ऑनलाइन भारतीयों को कुछ भी) इसके बाद भी नये लोगों को चमचागिरी के बारे में नहीं सिखाते थे। नए लोगों को अपने अनुभव से ही चमचागिरी करने का गुण सीखना पड़ता था। यह देखकर तखतमल जी को लगा कि नई बच्चों की मदद करना चाहिए। तब नौकरी में रहते तखतमल ने अपने लड़कों कुछ नुस्खे बता देते। बाद में गुरु दक्षिणा में से चाय समोसा खा लेते थे। वे चमचागिरी के प्रैक्टिकल तरीके से खास गुर भी सिखाते थे। तबसे लोगों ने गुरु कहना शुरू कर दिया। इसी गुरुत्व को बनाए रखने के लिए सेवा निवृत होने के बाद इस विषय पर गंभीरता से विचार किया। इस क्षेत्र में बहुत सारे स्कोप है। इस तरह कोर्स, कोई विश्वविद्यालय नहीं चलाता है। इस विद्या का उपयोग अपना काम निकालने में किया जाता है।इस विद्या की चर्चा आम जनमानस बहुत होती है। पर लोग आश्चर्य करते हैं कि विश्व में इस विषय का स्कूल कालेज नहीं है।पर लोग पारंगत हो जाते हैं।अभी तक कहीं पर भी इसके सीखने की चर्चा भी नहीं सुनी होगी।यह विद्या दूसरे के अनुभव से सीखते हैं। इस तरह सीखने में लम्बा समय लगता है। लोग तकनीकी रूप से सीख भी नहीं पाते हैं। कई लोग तो श्रम और समय अधिक लगने इसे बीच में छोड़ देते हैं और अपना बड़ा नुक़सान कर बैठते हैं। उन्होंने सोचा अपने पास लंबा चौड़ा अनुभव है। इस अनुभव का कौन सा उपयोग किया जाए और महाविद्यालय नहीं तो विद्यालय स्तर पर स्कूल खोल लिया जाए। उन्होंने अपने दो-तीन साथियों के साथ एक स्कूल खोल लिया। स्कूल का नाम रखा चमचा कला केंद्र अंग्रेजी में सी के सी ।

एक तखतमल जी बाज़ार में घूम रहे थे। टहलते हुए तखतमल की नजर मुझ पर पड़ गई थी। मैं उनसे बचना चाहता था। किंतु उन्होंने मुझे पकड़कर रोक लिया। वे मेरा हाथ पकड़ कर मुझे किनारे ले गये और सवाल किया - कहाँ जा रहे हो और आजकल क्या कर रहे हो। वैसे तखतमल जी सदा सवालों से बचते रहे हैं। जब मैंने कहा- कोई खास नहीं, बस ऐसे ही छोटे-मोटे काम से निकला हूँ।तब उन्होंने बोला - मैंने बहुत अच्छी स्कीम निकाली है। उसमें तुम चाहो तो शामिल हो सकते हो,या उपयोग में ला सकते हो। मैंने सोचा कोई आर्थिक विनियोग स्कीम होगी अगर सही होगी तो थोड़ा बहुत पैसा लगाया जा सकता है। तब मैंने ने उत्साह से पूछा,- तखतमल जी बताइए - क्या शुरू किया है। तो उन्होंने बहुत जोश के साथ कहा- मैंने अपना पूरा जीवन ऑफिस में इसी विद्या में अर्पित कर दिया है। इस विद्या से इसमें मुझे बहुत लाभ मिला। इसमें नुकसान की तो कोई गुंजाइश ही नहीं है और मेरे पास एक लंबा अनुभव भी है। इस कारण मैंने सोचा है। इस अनुभव का लाभ जनता जनार्दन और खासकर नए युवकों और अपने लोगों को जरूर मिलना चाहिए। जिससे वे भी अपने जीवन में सफल हो सके। तब मैंने ने पूछा- क्या काम है?तो उन्होंने धीर गम्भीर हो कर धीमे स्वर में कहा - मैने चमचागिरी सिखाने का स्कूल खोल लिया है। फिलहाल अभी स्कूल से चालू किया है और यह चल निकला तो बाद में इसे कालेज में प्रोमोट कर लेंगे।तो मैंने कहा- इसमें धीरे कहने की क्या बात है।इसे जोर से भी कह सकते थे और इस तरह के स्कूल खोलने से क्या होगा। लोग तो एक दूसरे को देखकर ही यह विद्या सीख जाते है। फिर लोग आपके पास सीखने क्यों आएंगे। लोग इसे बिना पैसा खर्च ही अपने काम का गुर सीख जाते हैं।तब उन्होंने बिना झिझक कहा- आप तो काफी सीनियर है और आपको याद भी होगा। पहले पत्रकारिता का कोई स्कूल या कॉलेज नहीं था और न ही किसी प्रकार की डिग्री थी। सब लोग अखबार में अपनी जान पहचान या योग्यता के बल पर काम मिल जाता था और शुरू कर देते थे और धीरे-धीरे पत्रकारिता में पारंगत हो जाते थे। इस स्थिति को देखते ही विश्वविद्यालय ने पत्रकारिता की डिग्री का कोर्स कर दिया है,और हर विश्वविद्यालय में यह कोर्स होता है।कुछ विश्व विद्यालय तो इसी कोर्स के लिए ही बने हैं। मुझे ऐसा अनुभव होता है। चमचागिरी कोर्स में भी काफी स्कोप है और हो सकता है कि यह बाद में यह विश्वविद्यालय स्तर पढ़ाया जाने लगे।मैंने कहा- -आप सही कह रहे हैं, पर मुझे करना क्या होगा और मैं तो इस मामले में फिसड्डी हूँ उन्हे याद आते ही वे अचानक बोल पड़े -अरे तुम तो इस मामले में सिफर हो और कुछ नहीं कर सकते हो, बिल्कुल नालायक हों। इसी ईमानदारी के कारण ऐसे पड़े हुए हो। रुको! मैं सोचता हूँ ।तुम्हारी कैसी मदद ले सकते हैं। आखिर हम है, हम वरिष्ठ।उनकी बात सुनते ही मुझे अपनी ईमानदारी पर लज्जा आने लगी। मुझे लगा कि ईमानदारी भी लज्जा का विषय है। मुझे ही अपने आप में कमी महसूस होने लगी। मैं इस समय अनुपयोगी हो

हूँ ।समाज में किसी भी काम का नहीं। फिर थोड़ा साहस बटोरते हुए उनसे पूछा - चमचागिरी की कितने विषय में होगी। तब उन्होंने उत्साह से कहा-% फिलहाल अभी हम तीन विषय पर केंद्रित कर रहे हैं। पहले समाज में चमचागिरी का उपयोग, दूसरा सरकारी कार्यालय में चमचागिरी का महत्व और तीसरा राजनीति में इसकी भूमिका। दूसरे विषय के कोर्स में विस्तार हो सकता है। इसमें हम सरकारी कार्यालय में चमचागिरी और प्राइवेट कार्यालय में चमचागिरी का महत्व आदि विषय, कोर्स में रख सकते हैं। यह तो बिल्कुल सही है। आपने कोर्स बहुत सोच समझ कर रखे हैं।यह कोर्स हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है और यह भी आपने अच्छा तय किया है कि स्कूल में यह तीनों विषय पढ़ाई जाएंगे।इन विषयों के बेसिक कोर्स से युवा पीढ़ी अपने भविष्य को बेहतर बना सकती है। आगे लोग अपने भविष्य को और बेहतर बनाने में मेहनत करना चाहते हैं तो कॉलेज में अपने क्षेत्र के अनुसार विषय का चयन कर सकते हैं और वे अपने भविष्य के अनुसार अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ हो जाएंगे।अपने जीवन को सफल बना सकते है। बस मैं सोच रहा था कि इस क्षेत्र में भी स्कूल खुल जाएंगे। तब निष्पक्षता, ईमानदारी भाई भतीजाबाज का क्या होगा? जब हम देश में लोकतंत्र में समान अवसर की बात करते हैं फिर सबको अवसर मिलना चाहिए।इस समान अवसर का क्या होगा? इस तरह की विद्या से नवयुवक दिशा हीन हो जाएंगे।

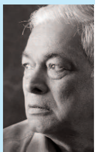

– रमेश सैनी

नवीन बस स्टैंड के पेट्रोल पंप के सामने, केबल वायर से जनता हैरान-परेशान... ट्रक में उलझ जाए तो सांसत में जान

महिदपुर। नवीन बस स्टैंड क्षेत्र में भारत पेट्रोल पंप के सामने दो बिजली के विद्युत खंभों के बीच में केबल वायर इस तरह डाली जाती है कि नीची होने से हर कभी उंचे भरे ट्रक में फंसकर दोनों बिजली के खंबों को हिलाकर उनमें स्पार्क करते हुए चिंगारियां प्रकट होने लगती हैं जो कभी भी खतरनाक स्थिति पैदा कर सकती है।आज और 10-15 दिन पहले भी इस तरह की घटना घट चुकी है।आज जब पत्रकार डोसी विद्युत मंडल में यह बात बताने गए तो मामला सार्वजनिक होने के बावजूद उनसे व्यक्तिगत रूप से रिपोर्ट लिखवाई गई और तत्पश्चात विद्युत मंडल से सेवा कर्मी आए।पूर्व की घटना में कुछ भी लिखाया नहीं गया था,मौखिक रूप से ही मामले की नजाकत समझते हुए तुरंत आकर समाधान किया था।उन्होंने केबल वालों को फोन लगाकर कहा कि यह आगे से केबल हटाकर हमेशा के लिए इसको व्यवस्थित रूप से पीछे से ले जाई जाए।

आज पंप व्यवसाय के ग्राहक कई ट्रक वाले इस बात को देखकर बिना ईंधन लिए खाली गए।दो बिजली के खंबों से लगी होने से दोनों खंबो को कंपन्न कर चिंगारियां निकल कर किसी दिन भी तार टूटकर लंबी जन धन हानि का कारण बन सकता है।इस पर गंभीरता से ध्यान देना बहुत जरूरी है।

संतुलित यूपीआई एमडीआर फेमवर्क करेंगे ग्राहकों और छोटे व्यापारियों के हितों की रक्षा

बैंक ऑफ बड़ौदा के वर्तमान प्रबंध निदेशक (MD) और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) डॉ. देबादत्ता चंद

1) अपनी डिजिटल बैंकिंग क्षमताओं को सुदृढ़ करने की दिशा में बैंक ऑफ़ बड़ौदा की मुख्य प्राथमिकताएँ क्या हैं?

हमारा उद्देश्य ग्राहकों के लिए डिजिटल बैंकिंग को आसान, सुरक्षित और अधिक सुविधाजनक बनाना है। बॉब वर्ल्ड 2.0 के साथ, हम वॉइस-इनेबल्ड बैंकिंग और अधिक पर्सनलाइज्ड सेवाओं जैसी सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं। हम तकनीक के माध्यम से बैंकिंग, क्रेडिट और निवेश तक पहुंच को आसान बनाने का प्रयास भी कर रहे हैं। साथ ही, हम साइबर सुरक्षा और धोखाधड़ी से बचाव के उपायों को भी सुदृढ कर रहे हैं ताकि ग्राहक भरोसे के साथ बैंकिंग कर सकें।

2) यूपीआई भारत के डिजिटल भुगतान इकोसिस्टम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसके विकास के अगले चरण के लिए आप सबसे बड़ा अवसर किसे मानते हैं?

यूपीआई लाखों भारतीयों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। अगले चरण में, इसके फायदों को और अधिक लोगों तक विशेषकर छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचाया जाना है तथा छोटे दुकानदारों और व्यवसायों द्वारा इसके उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना है। ज्यादा से ज्यादा लोगों और व्यवसायों को औपचारिक वित्तीय व्यवस्था से जोड़ते हुए, यूपीआई वित्तीय समावेशन का एक और बड़ा माध्यम बन सकता है।

3) नए यूपीआई एमडीआर फ्रेमवर्क का ग्राहकों और दुकानदारों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

ग्राहकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। ग्राहकों के लिए यूपीआई अभी भी निःशुल्क है और उनसे एमडीआर शुल्क नहीं लिया जाएगा। छोटे व्यापारियों को भी राहत दी गई है, क्योंकि दो हजार रुपये तक के लेनदेन एमडीआर के दायरे से बाहर हैं। इसमें शामिल लेनदेन में से लगभग 96त्न मर्चेंट लेनदेन हैं। इसका मतलब है कि अधिकांश व्यापारी इससे अप्रभावित रहेंगे। अधिक मूल्य वाले लेनदेन के लिए, एक मामूली शुल्क निरंतर बढ़ते हुए डिजिटल भुगतानों और इकोसिस्टम की दीर्घकालिक स्थिरता के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करेगा।

4) कुछ मर्चेंटस ने एमडीआर को लेकर चिंताएं व्यक्त की हैं। क्या इससे देश में यूपीआई के विकास पर कोई प्रभाव पड़ेगा?

हमारा मानना है कि यूपीआई की अभी तक की विकास यात्रा बेहद प्रभावी रही है। तीव्र, सुविधाजनक और सरल होने के कारण ग्राहकों और मर्चेंट्स के लिए यूपीआई अत्यंत महत्वपूर्ण है। चूंकि अधिकांश दैनिक व्यावसायिक लेनदेन एमडीआर फ्रेमवर्क के दायरे से बाहर हैं, इसलिए अधिकांश मर्चेंट्स पर इसका प्रभाव सीमित होगा। जैसे-जैसे लोग डिजिटल को अपनाते जाएंगे, हमें आशा है कि यूपीआई देश भर के ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों, मर्चेंट्स और छोटे उद्यमों तक पहुंचेगा।

5) नया एमडीआर फ्रेमवर्क एक स्थायी यूपीआई इकोसिस्टम के निर्माण में कैसे सहायक है और डिजिटल भुगतान, वित्तीय समावेशन और नवाचार के अगले चरण में किस प्रकार योगदान दे सकता है?

यूपीआई ने तेजी से प्रगति की है। एक सुरक्षित, विश्वसनीय और विश्व स्तरीय भुगतान नेटवर्क के संचालन के लिए, तकनीक और साइबर सुरक्षा में निरंतर निवेश की आवश्यकता होती है। एक स्थायी इकोसिस्टम भविष्य के नवाचारों का समर्थन करने, ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों और छोटे व्यापारियों के लिए डिजिटल पेमेंट की सुविधा उपलब्ध कराने और वित्तीय समावेशन को सुदृढ़ करने में मदद करेगा। इससे भारत की डिजिटल पेमेंट जर्नी को अगले चरण की ओर ले जाने तथा देश के हर कोने तक डिजिटल पेमेंट की पहुंच सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

धार्मिक आयोजनों से युवाओं में संस्कार और सनातन संस्कृति को मिलती है नई ऊर्जा

आष्टा। नजर गंज स्थित श्री सोमवंशीय राम मंदिर परिसर में आयोजित होने वाले मां अंबे महारानी गरबा उत्सव एवं विसर्जन जुलूस की तैयारियां शुरू हो गई हैं। इसी क्रम में पूर्व नपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी कैलाश परमार ने अपने कार्यालय परमार लॉ चैंबर में समिति अध्यक्ष निखिल नरेन्द्र कुशवाह का पुष्पमाला और साफा पहनाकर स्वागत किया। उन्होंने समिति को सहयोग राशि प्रदान कर आयोजन की सफलता के लिए अग्रिम शुभकामनाएं दीं। कैलाश परमार ने कहा कि धार्मिक आयोजन सनातन संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के साथ सामाजिक एकता एवं भाईचारे को मजबूत करते हैं। ऐसे आयोजनों से युवा पीढ़ी में धार्मिक संस्कार विकसित होते हैं और नई पीढ़ी अपनी संस्कृति से जुड़ती है। उन्होंने युवाओं की सक्रिय भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि युवा शक्ति धर्म और संस्कृति की सशक्त वाहक है। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष निखिल कुशवाह सहित आशुतोष नामदेव, अनमोल कुशवाह, राज कुशवाह, पटेल यादव, अर्जुन चौहान, यश ठाकुर, राज सूर्यवंशी, कृष्णा सोनी, सोमेश मालवीय, हिमांशु परमार, सोमेश मौलवी, जय दरबार, आदर्श सोनी, कीर्तन कुशवाह सहित अन्य युवाओं का मां अंबे महारानी के नाम अंकित वस्त्र एवं दुपट्टे पहनाकर सम्मान किया गया। समिति के युवा सदस्य गरबा उत्सव और विसर्जन जुलूस को भव्य एवं व्यवस्थित बनाने की तैयारियों में जुटे हैं।